ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-200-202,YEAR-2013

उत्तर प्रदेश में संसाधनों का उपयोग एवं संरक्षण

❑ डॉ0 निशि प्रकाश

आज विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या के चलते प्रत्येक राष्ट्र अपने देश की जनसंख्या के भरण–पोषण की समस्या से जूझ रहा है। यह आज के समय में राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तराष्ट्रीय समस्या है। जिन देशों ने मिट्टी एवं वनस्पतिक तथा जनससंाधनों के समुचित उपयोग महीं हो पाया है, उन देशों में यह समस्या और भी विकराल है। बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए मसन्तुलित आहार को प्र'प्ति सरलता से हो सके, उसके लिए यह आबश्यक है कि पृथ्वी के धरातल पर फैले संसाधनों का उचित प्रयोग हो सके जिसके पहले कम से कम मात्रा में दोहन के बावजूद अधिक से मात्रा में अधिक उत्पादन एवं उपयोगिता प्राप्त हो सके।

संसाधन मानवीय सुख, समृद्धि एवं कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आधुनिक मानव की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति उसके प्राकृतिक संसाधनों के समुचित दोहन से प्राप्त किया जा सकती है। इसलिए वर्तमान समय में सभी देश अपने अस्तित्व और सत्ता के लिए संसाधनों के प्रति संवदेनशील हो गये हैं। आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन तथा अविवेक पूर्ण शोषण के कारण प्राकृतिक वातावरण की गुणवत्ता में कमी हुई है।

मानवीय उपयोग में प्रयुक्त होने वाले तत्व भूमि, मिटघ्टी, वनस्पति, जीव–जन्तु, जल एवं रत्रनिज आदि समस्त प्राकृतिक उपहारों के संसाधन कहा जा सकता है। जब तक इनका उपयोग मानवीय विशेषताओं ज्ञान राजनैतिक व सामाजिक संगठन तथा उसके नैतिक उपयोग की क्षमता से होता है तभी तक लाभप्रद एवं विकास युक्त होता है।

इस प्रकार के संसाधनों का आशय किसी वस्तु या पदार्थ से नही वर्ण प्राकृतिक व्यवस्था से है। जिसकी जाँच दो बिन्दुओं से की जा सकती है

(1) उपयोगिता

(2) कार्यात्मकता

जनसंख्या की तीव्र विकास– जनसंख्या का तेजी से बढ़ने से संसाधनों पर अप्रत्याशित दबाव पडता है चूंकि जनसंख्या बढ़ने पर माँग बढ़ जाती है जिससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष क्रियाशीलता बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए जैसेभोजन, मकान, वस्त्र जिनसे आधार५त ढांचा बिगड़ जाता है।

तकनीक और विज्ञान विकास– इसके कारण भी संसाधनों पर दबाव पड़ता है। यदि मनुष्य कोई खोज कर लेता है। तो वह उत्तम संसाधन का उपयोग अंधा–धुंध करने लगता है।

मानव जीवन का भौतिकवादी दृष्टिकोण– यह आर्थिक संसाधनों पर निर्भर है यदि मानव का विश्वास अध्यात्मिकता में हो जाता है। तो फिर संसाधनों पर कोई दबाव नहीं पड़ता है किन्तु ऐसा वर्तमान परिवेश में सम्बन्ध नहीं है। आज मनुष्य संसाधनों का उपयोग बरुरद्धमत्ता पूर्ण नहीं कर रहा है। इसीलिए विकास की अवधारणा बिगड़ रही है।

मानव द्वारा संसाधन का उपयोग सामाजिक एवं आर्थिक उनयन के उद्देश्य को प्राप्त करना है अर्थात यह उद्देश्य व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं सामाजिक, आर्थिक उद्देश्यों कौ पूर्ति करता है। इसी कारण जल, वायु, सूर्य प्रकाश एवं ताप, मिट्टी , वन, भूमि, कोयला , मशीनरी आदि सभी को संसाधनों की संज्ञा दी जाती है। क्योंकि उमसे मानव की किसी न किसी रूप में आवश्यकता की पूर्ति होती है।

विश्व का ऐसा कोई भी देश नहों है जिसका एकाएक विकास हुआ हो क्योंकि विश्व के सभी देशों

विभागाध्यक्ष समाज शास्त्र विभाग, एस. एन. सेन. बी वी. पी. जी कालेज, कानपुर (उ0प्र0), भारत

को आर्थिक विकास की अनेक अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। याद रहे कि कोई भी क्षेत्र आर्थिक विकास की एक स्थिति में नहीं रहता है बल्कि ज्यों ज्यों उनकी स्थिति में परिवर्तन होता जाता है तथा तकनीक एवं वैज्ञात्रिक प्रगति के साथ–साथ वह क्षेत्र भी विकास की ओर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप एक समय ऐसा आता है जबकि आर्थिक घविकाम चरम सीमा तक पहुँच जाता है। संसाधन का अध्ययन दो मुख्य समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक प्रतीत होता है।

किसी देश की आन्तरिक बढ़ती हुई जनसंख्या की माँग के लिए संसाधनों की पूर्ति किस तरह से हो सके जिससे बढ़ती हुई जनसंख्या के आधार पर आवश्ग्रकताओं की पूर्ति का ढाँचा संसाधन बढ़ाया जा सके ।

संसाधन का महत्व इसलिए भी है कि किस प्रकार से हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का नियोजन राष्ट्रीय दृष्टि से करें और आने वाली पीढ़ियों को बुरे समय का मुँह न देखना पड़े यह स्थिति विभिन क्षेत्रों के मनुष्यों की वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान पर निर्भर करता है। कि वह किस प्रकार से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग एवं संरक्षण की विधियाँ लागू करता है।

उत्तर प्रदेश न केवल सम्पूर्ण भारत के आर्थिक विकास वाला प्रदेश है। परन्तु इस प्रदेश की आर्थिक संरचना कुछ इस प्रकार है कि यहाँ के लोग संसाधनों का उपयोग कम करते हैं बल्कि अनुपयोग अधिक करते हैं तथा अपनी जीविका के लिए किसी भी स्तर पर जाकर संसाधनों का अनुपयोग करते हैं। जिससे अन्य लोगों को जाने अनजाने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

वर्तमान समय में आर्थिक संसाधनों का उपयोग एवं संरक्षण जैसे शोध विषय पर शोंध कार्य करने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। चूँकि प्रदेश के आर्थिक विकास के परिदृश्य में इस प्रकार का कोई कार्य नहीं हुआ है जबकि आर्थिक संसाधनों का उपयोग निरन्तर बन्द रहा है जबकि इसका उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से नहीं किया जा रहा है।

प्रदेश में प्रतिदिन अनेक समस्याएं ब्रढ़ती ही जा रही हैं ऐसे में एक दिन ऐसा आयेगा कि वह प्रदेश उत्तम प्रदेश कहलाने योग्य अपनी सभी विशेषताओं को खो देगा। यहाँ का निवासी अपना आर्थिक विकास तो क्या रोजी रोटी के लिए.न केवल संघर्ष करेगा बल्कि अनेक असामाजिक समस्य'ओं का शिकार बन जायेगा साथ ही आर्थिक विकास की तमाम योजनाओं तथा भविष्य में संसाधनों के संरक्षण का अस्तित्व ही खत्म हो जायेगाद्य

निष्कर्ष– संसाधनों का उपयोग देशवासियों को संतुलित मात्रा में करना चाहिए. उन्हें यह तथ्य भी ध्यान में रखना चाहिए कि विकास के नाम प्राकृतिक संसाधनों को अंधाधुंध उपयोग न करें। प्रदेशवासियों को संसाधनों का उपयोग वैज्ञानिक एवं तकनीकी आधार पर ही करना चाहिए। अतः सरकार को भी संसाधनों की उचित तकनीक को प्रदेशवासियों तक मीडिया के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करना चाहिए। चूँकि प्रदेश की अर्थ व्यवस्था क्षि पर आध ाारित है। अतः कृषि संसाधन उपयोग को तकनीकी सम्पन्न बनाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

संसाधनों का संरक्षण वास्तव में पीढ़ी का भविष्य है तथा वर्तमान पीढ़ी के लिए सभी प्रकार के संस्णधनों का संरक्षण प्रदान करें ताकि आने वाली पीढ़ी भी प्रगति कर सके। आने वाली पीढ़ी भी प्रगति कर सके तथा किसी प्रकार के उपयोग से वंचित न रह सके।

संसाधन संरक्षण की भावना का होना तथा यह वर्तमान पीढ़ी के त्याग का प्रतिफल है। अतः भावात्मक रूप से संसाधनों के संरक्षण के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। संसाधनों के संरक्षण हेतु यह आवश्यक है कि विज्ञान एवं संरक्षण तकनीकि का ज्ञान होना चाहिए। इसी हेतु सरकार द्वारा केन्द्र खोलना चाहिए, प्राकृतिक उत्पादन जैसे जल आदि का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है। कि ऐसा अनुमान है कि भविष्य में युद्ध जल के ही होंगे ऐसा जानकर भी जल संरक्षण के प्रति जागरूकता न होना दुर्भाग्यपूर्ण है। अतः जल संरक्षण कर तथा सिंचाई हेतु जल की राष्ट्रीय प्रणली–को विकसित कर जल को व्यर्थ नष्ट होने से संरक्षण प्रदान करना चाहिए। वायु को प्रदूषित

होने से बचाने के लिए प्रदेशवासियों को तथा सरकार दोनों को मिलकर करना चाहिए। खनिज पदार्थ के उपयोग को सीमित मात्रा में ही रगत्लना चाहिए तथा उन्हें संरक्षण प्रदान करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Allen, S.W. and Leonard. J.W.. 1966. Conserving Natural Re sources McGraw Hill.
2. Borgstrom, G., 1965. The Hungry Planet.
3. Brown, H, 1954. The Challenges of Man's Future.
4. Culbertson, J.M. 1971, Economic Development, An Ecological Ap proach.
5. Grag W. L. 1976. Resources the En vironment and the American Expe rience J.G
6. Jackson, N. and Penn, P. 1966. Dic tionary of Natural Resources and their Principal Uses. N. Y.
7. Mountjoy, A.B. 1975, Industrializa tion in Developing Countries.
8. Pearce, D. W. 1975. The Economies of Natural Depletion.
9. Smith, G B. 1965, Conservation of Natural Resources N. Y.
10. Walford L. 4. 1958, Living Re sources of the Sea.
11. Zimmermain, W. E. 1951, World Re sources and Industries, Harper & Row.
12. Desai, S.S.M. Development of In dian Economic Thought (1987).
13. Desai and Bhalerao, Economic His tory of India (1999).

*****